लिंगाष्टकम्

ब्रह्म मुरारि सुरार्चित लिंगम्
निर्मल भाषित शोभित लिंगम् ।
जन्मजदुःख विनाशक लिंगम्
तत् प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥ 1 ॥

देव मुनि प्रवरार्चित लिंगम्
काम दहं करुणाकर लिंगम् ।
रावण दर्प विनाशन लिंगम्
तत् प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥ 2 ॥

सर्व सुगन्धि सुलेपित लिंगम्
बुद्धि विवर्धन कारण लिंगम् ।
सिद्ध सुरासुर वन्दित लिंगम्
तत् प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥ 3 ॥

कनक महामणि भूषित लिंगम्
फणिपति वेष्टित शोभित लिंगम् ।
दक्ष सुयज्ञ विनाशन लिंगम्
तत् प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥ 4 ॥

कुंकुम चंदन लेपित लिंगम्
पंकजहार सुषोभित लिंगम् ।
संचित पाप विनाशन लिंगम्
तत् प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ।। 5 ।।

देव गणार्चित सेवित लिंगम्
भावैर् भक्तिभिर् एव च लिंगम् ।
दिनकर कोटि प्रभाकर लिंगम्
तत् प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ।। 6 ।।

अष्टदलोपरिवेष्टित लिंगम्
सर्व समुद्भव कारण लिंगम् ।
अष्ट दरिद्र विनाशन लिंगम् ।
तत् प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ।। 7 ।।

सुरगुरु सुरवर पूजित लिंगम्
सुरवन पुष्प सदार्चित लिंगम् ।
परात्परं परमात्मक लिंगम्
तत् प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ।। 8 ।।

लिंगाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेत् शिव सन्निधौ ।
शिवलोकं अवाप्नोति शिवेन सह मोदते ।।